# जुमे का खुत्बा

**दिनांक:** 11 मुहर्रम 1448 हिजरी मुताबिक 26 जून 2026 ई.

## خَطَرُ الْفَسَادِ عَلَى الْمُجْتَمَعَاتِ وَالْأَفْرَادِ

# व्यक्तियों और समाज पर फ़साद की तबाहकारियां

सारी तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, हम उसी की तारीफ़ करते हैं,उसी से मदद मांगते हैं और उसी से माफ़ी तलब करते हैं। और हम अपने नफ़्स की बुराइयों और अपने बुरे कर्मों से अल्लाह की पनाह मांगते हैं। जिसे अल्लाह हिदायत दे दे उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं,और जिसे वह गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं, वह अकेला है,उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उसके बंदे और रसूल हैं।

{يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ} [آل عمران: ١٠٢]

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो जैसा उससे डरने का हक़ है, और तुम्हें मौत न आए मगर इस हाल में कि तुम मुसलमान हो।" [सूरह आले-इमरान: 102]

{يَاأَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا} [النساء: 1]

"ऐ लोगो! अपने उस रब से डरो जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया, और उसी से उसका जोड़ा बनाया,और उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें फैला दिए। और उस अल्लाह से डरो जिसके वास्ते से तुम एक-दूसरे से सवाल करते हो, और रिश्तों (को तोड़ने) से बचो। बेशक अल्लाह तुम पर पूरी तरह निगरानी करने वाला है।" [सूरह अन-निसा: 1]

{يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا (70) يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا} [الأحزاب: 70، 71]

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सीधी (सच्ची) बात कहा करो। वह तुम्हारे काम सही कर देगा और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा। और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल का कहा माने (आज्ञापालन) करे, तो यक़ीनन उसने बहुत बड़ी कामयाबी हासिल कर ली।" [सूरह अल-अहज़ाब: 70, 71]

सबसे सच्ची बात अल्लाह तआला की किताब है, और सबसे बेहतरीन तरीक़ा मुहम्मद ﷺ का तरीक़ा है। सबसे बुरे काम (दीन में) नए निकाले गए काम हैं, और (दीन में निकाला गया) हर

नया काम बिदअत है,और हर बिदअत गुमराही है, और हर गुमराही जहन्नम में ले जाने वाली है।

ऐ मुसलमानो! अल्लाह तआला ने अपने नबी मुहम्मद ﷺ को रसूलों के आने के एक लंबे अंतराल और आसमानी किताबों के बदलाव का शिकार होने के बाद एक ऐसी क़ौम में भेजा, जो सख़्त जहालत और अंधी गुमराही में डूबी हुई थी। वह न हक़ और बातिल के बीच अंतर कर सकती थी और न ही नेकी और बुराई में फ़र्क़ जानती थी। अल्लाह तआला ने कहा:

{ هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ} [الجمعة: 2]

"वही है जिसने निरक्षरों में उन्हीं में से एक रसूल भेजा, जो उन पर उसकी आयात की तिलावत करता है, उन्हें पाक करता है, और उन्हें किताब और हिकमत की तालीम देता है, और यक़ीनन वह इससे पहले खुली गुमराही में थे।" [सूरह अल-जुमुआ: 2]

अतः अल्लाह तआला ने आप ﷺ के ज़रिए उन्हें गुमराही से निकालकर हिदायत दी, और अंधेपन के बाद दृष्टि दी। आप ﷺ की दावत की पैरवी से मन पाक हो गए, और इस्लाम की वजह से दिल सीधे रास्ते पर आ गए।

इस्लाम के सबसे अहम सिद्धांतों और उसकी महान शिक्षाओं में से, जिनके ज़रिए नबी ﷺ को भेजा गया, जिनकी आपने ताकीद फ़रमाई और जिनकी मुखालिफ़त से डराया, वह हैं: ज़ुल्म व ज़्यादती और फ़साद (बिगाड़/भ्रष्टाचार) के हराम होने का ऐलान, और ज़ुल्म व अत्याचार तथा फ़साद के ख़ात्मे के लिए जंग अनिवार्य ठहराना। अल्लाह तआला ने कहा:

{وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا} [الأعراف: 56]

"और ज़मीन में उसके सुधार के बाद फ़साद न फैलाओ।" [सूरह अल-अराफ़: 56]

और फ़रमाया:

{ وَإِذَا تَوَلَّى سَعَى فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ} [البقرة: 205]

"और जब वह पीठ फेर कर जाता है तो ज़मीन में दौड़-धूप करता है ताकि उसमें फ़साद फैलाए और खेती और नस्ल को तबाह कर दे, और अल्लाह फ़साद को पसंद नहीं करता।" [सूरह अल-बक़रह: 205]

इमाम मुजाहिद रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं: "जब कोई ज़मीन में फ़साद फैलाने की कोशिश करता है, तो अल्लाह तआला बारिश को रोक लेता है, जिससे खेती और नस्ल बर्बाद हो जाती है।"

इस्लामी भाइयो! अल्लाह तआला ने ज़मीन में फ़साद फैलाने से ख़बरदार किया है, और उसकी सारी शक्लों और क़िस्मों की निंदा की है: चाहे वह जानों का बिगाड़ हो,या वंश, माल, अक़्ल और दीन का फ़साद हो। अल्लाह ने इसे बड़े गुनाहों में शुमार किया है,और इसमें ग्रस्त लोगों को लानत और अज़ाब की चेतावनी दी है। अल्लाह तआला ने कहा:

{وَالَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولَئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ} [الرعد: 25]

"और वे लोग जो अल्लाह के वचन को मज़बूत करने के बाद तोड़ देते हैं, और जिन (रिश्तों) को अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है उन्हें काटते हैं, और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं, उन्हीं लोगों के लिए लानत है और उन्हीं के लिए बुरा घर (जहन्नम) है।" [सूरह अर-रअद: 25]

और यह बात सुन लें कि फ़साद की सबसे ख़तरनाक सूरत और समाज और व्यक्ति के लिए सबसे ज़्यादा नुक़सानदेह चीज़, लोगों के अक़ायद (आस्थाओं) को बिगाड़ना और उन पर उनके दीन को संदिग्ध कर देना है,जो कि बिदअतों को फैलाने और पाप और बुराई को बढ़ावा देने का साधन होता है। अल्लाह तआला ने कहा:

{وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ} [البقرة: 11]

"और जब उनसे कहा जाता है कि ज़मीन में फ़साद न फैलाओ, तो कहते हैं कि हम तो बस सुधार करने वाले हैं।" [सूरह अल-बक़रह: 11]

इमाम मुजाहिद रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं: "जब वे अल्लाह की नाफ़रमानी करते हैं और उनसे कहा जाता है कि ऐसा और ऐसा न करो,तो वे जवाब देते हैं कि हम तो हिदायत पर हैं और सुधार करने वाले हैं।"

मुसलमान भाइयो! सावधान रहो! सबसे ख़तरनाक फ़ितनों और सबसे ज़्यादा नुक़सानदेह मुसीबतों में से एक माली भ्रष्टाचार की आफ़त है, जिसके बुरे अंजाम और ख़तरनाक प्रभाव से शरीअत ने डराया है। अल्लाह तआला ने फरमाया:

{وَاعْلَمُوا أَنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ وَأَنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ} [الأنفال: 28]

"और जान लो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद बस एक आज़माइश हैं, और यह कि अल्लाह ही के पास बहुत बड़ा सवाब है।" [सूरह अल-अनफ़ाल: 28]

और हज़रत काब बिन अयाज़ रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है,वह फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह फ़रमाते हुए सुना:

إِنَّ لِكُلِّ أُمَّةٍ فِتْنَةً، وَفِتْنَةُ أُمَّتِي الْمَالُ [رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ، وَقَالَ: حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ]

"बेशक हर उम्मत के लिए एक फ़ितना (आज़माइश) रहा है, और मेरी उम्मत का फ़ितना माल है।" (इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और इसे हसन सही क़रार दिया है)।

माली भ्रष्टाचार के रूपों में से एक रिश्वत का आम होना है। किसी समाज में रिश्वत उसी वक़्त फैलती है जब वह उसके व्यक्तियों की अंतरात्मा को बिगाड़ कर उसके कोने-कोने से भरोसे की रौशनी बुझा देती है। इसीलिए इस्लाम में इसकी सख़्त मनाही आई है, और क़ुरआन व हदीस में रिश्वत का लेन-देन करने वालों के लिए सख़्त चेतावनी और तंबीह आई है। अल्लाह तआला ने यहूदियों की सिफ़ात का ज़िक्र करते हुए कहा:

{سَمَّاعُونَ لِلْكَذِبِ أَكَّالُونَ لِلسُّحْتِ} [المائدة: 42]

"यह कान लगाकर झूठ सुनने वाले और जी भर-भरकर हराम खाने वाले हैं।" [सूरह अल-माइदा: 42]

हसन बसरी और क़तादा रहिमहुमल्लाह 'सुह्त' की व्याख्या में फ़रमाते हैं: "इससे मुराद (तात्पर्य) रिश्वत है"। और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है,उन्होंने कहा:

لَعَنَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الرَّاشِيَ وَالْمُرْتَشِيَ [رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَالتِّرْمِذِيُّ، وَقَالَ: حَدِيثٌ حَسَنٌ صَحِيحٌ]

"रसूलुल्लाह ﷺ ने रिश्वत देने वाले और रिश्वत लेने वाले पर लानत फ़रमाई है।" (इस हदीस को इमाम अबू दाऊद और इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और इसे हसन सही क़रार दिया है)।

लानत का मतलब है: अल्लाह तआला की रहमत से दुत्कारा जाना और दूर कर दिया जाना। तो भला वह आदमी किस फ़ायदे की तलाश में है और किस कमाई की उम्मीद रखता है जो लानत का हक़दार बन गया और सबसे ज़्यादा रहम करने वाली ज़ात की रहमत से दुत्कार दिया गया?

ऐ अल्लाह के बंदो! रिश्वत की विभिन्न सूरतें और शक्लें हैं, जिनमें शैतान कुछ कमज़ोर ईमान वालों और जाहिलों को धोखे में ग्रस्त कर देता है, चुनांचे वे इसका नाम बदल देते हैं ताकि इस हराम माल को अपने लिए हलाल ठहरा लें। इन्हीं सूरतों में से एक: कर्मचारियों और आमिलों को दिए जाने वाले तोहफ़े-तहाइफ़, उपहार और भेंट हैं। हज़रत अबू हुमैद साइदी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि: "रसूलुल्लाह ﷺ ने क़बीला बनू असद के एक आदमी को जिसे इब्नुल-

लुत्बिय्या कहा जाता था,ज़कात वसूल करने पर नियुक्त किया। जब वह वापस आया तो कहने लगा: यह माल आपका है और यह मुझे तोहफ़े में दिया गया है। इस पर नबी करीम ﷺ मिंबर पर खड़े हुए, अल्लाह की हम्द व सना बयान की,फिर फ़रमाया:

مَا بَالُ الْعَامِلِ نَبْعَثُهُ فَيَأْتِي يَقُولُ: هَذَا لَكَ، وَهَذَا أُهْدِيَ لِي؟ فَهَلَّا جَلَسَ فِي بَيْتِ أَبِيهِ وَأُمِّهِ فَيَنْظُرَ أَيُهْدَى لَهُ أَمْ لَا؟ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَا يَأْتِي بِشَيْءٍ إِلَّا جَاءَ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَحْمِلُهُ عَلَى رَقَبَتِهِ [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ]

'उस कर्मचारी का क्या हाल है जिसे हम (ज़कात की वसूली के लिए) भेजते हैं तो वह आकर कहता है कि यह आपका है और यह मुझे तोहफ़ा दिया गया है? वह अपने बाप या अपनी माँ के घर में क्यों न बैठा रहा कि फिर देखता कि उसे कोई तोहफ़ा दिया जाता है या नहीं? उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! तुम में से जो आदमी भी इसमें से कोई चीज़ (नाहक़) लेगा, वह क़यामत के दिन उसे अपनी गर्दन पर उठाकर लाएगा।'" (सही बुख़ारी, सही मुस्लिम)

ऐ अल्लाह के बंदो! माली भ्रष्टाचार की विभिन्न सूरतों में से: धोखा-दही, हेराफेरी और इन जैसे अन्य तरीक़ों से माल कमाना भी शामिल है। अल्लाह तआला ने कहा:

{وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ} [البقرة: 188]

"और तुम एक-दूसरे का माल आपस में नाहक़ तरीक़े से न खाया करो।" [सूरह अल-बक़रह: 188]

इमाम क़ुर्तुबी रहिमहुल्लाह अपनी तफ़्सीर में फ़रमाते हैं: "जिस आदमी ने किसी दूसरे का माल शरीअत की इजाज़त के बिना लिया, तो यक़ीनन उसने उसे नाहक़ तरीक़े से खाया।" अल्लाह तआला ने हराम माल खाने वालों को सख़्त तरीन अज़ाब की चेतावनी दी है, और उनके हक़ में एक ऐसी सूरह उतारी है जिसकी तिलावत क़यामत तक की जाती रहेगी, अल्लाह ने कहा:

{وَيْلٌ لِلْمُطَفِّفِينَ (1) الَّذِينَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ (2) وَإِذَا كَالُوهُمْ أَوْ وَزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ (3) أَلَا يَظُنُّ أُولَئِكَ أَنَّهُمْ مَبْعُوثُونَ(4) لِيَوْمٍ عَظِيمٍ (5) يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ} [المطففين: 1 - 6]

"बड़ी हलाकत है नाप-तौल में कमी करने वालों के लिए। वे लोग कि जब लोगों से नाप कर लेते हैं तो पूरा लेते हैं। और जब उन्हें नाप कर या तौल कर देते हैं तो कम देते हैं। क्या ये लोग ख़्याल नहीं करते कि वे उठाए जाने वाले हैं? एक बड़े दिन के लिए। जिस दिन सारे लोग समस्त लोकों के पालनहार के सामने खड़े होंगे।" [सूरह अल-मुतफ्फिफीन: 1 - 6]

और हज़रत ख़ौला बिन्त क़ैस अंसारिया रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है, उन्होंने कहा: मैंने नबी करीम ﷺ को यह फ़रमाते हुए सुना:

إِنَّ رِجَالًا يَتَخَوَّضُونَ فِي مَالِ اللهِ بِغَيْرِ حَقٍّ، فَلَهُمُ النَّارُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ]

"बेशक कुछ लोग अल्लाह के माल में नाहक़ हेराफेरी करते हैं, सो उनके लिए क़यामत के दिन जहन्नम की आग है।" (इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने रिवायत किया है)।

ऐ मुसलमानो! भ्रष्टाचार और फ़साद का आम होना सिर्फ कोई वित्तीय या प्रशासनिक ख़राबी नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी लाइलाज बीमारी है जो किसी भी क़ौम की तबाही की घोषणा है। जब कोई क़ौम इसमें ग्रस्त होती है तो उसकी तबाही का सफ़र तेज़ हो जाता है। इतिहास बताता है कि जो क़ौमें कभी दुनिया पर हावी थीं, फिर गुज़रते ज़माने के साथ मिट गईं, उनके मिटने का सबसे पहला और बड़ा कारण फ़साद और ज़ुल्म ही था। अल्लाह तआला का फ़रमान है:

{ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ} [الروم: 41]

"जल और थल (ज़मीन और समुद्र) में लोगों के हाथों की कमाई (बुरे कर्मों) के कारण बिगाड़ (फ़साद) फैल गया, ताकि वह उन्हें उनके कुछ कर्मों का मज़ा चखाए, ताकि वे बाज़ आ जाएँ (लौट आएँ)।" [सूरह अर-रूम: 41]

ऐ अल्लाह! हमें अपने हलाल के ज़रिए अपने हराम से बचाकर काफ़ी हो जा, और अपनी कृपा से हमें अपने सिवा हर किसी से बेनियाज़ कर दे। अल्लाह मेरे और आपके लिए पवित्र क़ुरआन में बरकत दे, और मुझे और आपको इसकी आयतों और हिकमत भरे ज़िक्र से लाभ पहुँचाए। मैं अपनी यह बात कहता हूँ और अपने और आपके लिए अल्लाह से माफ़ी माँगता हूँ, इसलिए आप भी उससे माफ़ी माँगें, बेशख वह बहुत माफ़ करने वाला, अत्यंत दयालु है।

## दूसरा ख़ुत्बा

सारी तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं जो सारी दुनिया का पालने वाला है, और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उसके बंदे और रसूल हैं। अल्लाह तआला की उन पर और उनके सारे परिवार और सहाबा पर रहमतें और दरूद व सलाम नाज़िल हों।

मैं आपको और स्वयं को अल्लाह तआला के तक़वा की वसीयत करता हूँ, क्योंकि जिसने अल्लाह का तक़वा अपनाया, अल्लाह उसे बचा लेता है, उसे सुरक्षित रखता है और उसे पनाह देता है।

ऐ मुसलमानो! मुस्लिम समुदाय ने क़ौमों के बीच अपनी यह श्रेष्ठता और बड़प्पन अपनी अधिक संख्या या अपनी संसाधनों की ताक़त से हासिल नहीं की है, बल्कि उसने यह स्थान अपने रब के हुक्म का पालन करने और अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाने के कारण हासिल किया है;यानी भलाई का हुक्म देने, बुराई से रोकने और अल्लाह तआला पर ईमान लाने के ज़रिए। अल्लाह तआला ने कहा:

{كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ} [آل عمران: 110]

"तुम बेहतरीन उम्मत (समुदाय) हो जो लोगों (के मार्गदर्शन) के लिए निकाली गई है, तुम नेकी का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो।" [सूरह आले इमरान: 110]

बुराई से रोकना कोई नफ़्ली (ऐच्छिक) काम या हमारी मर्ज़ी पर छोड़ा गया मामला नहीं है, बल्कि यह हम सब की बुनियादी ज़िम्मेदारी है। वास्तव में यह हमारे समाज की नाव को डूबने से बचाने की एक अहम गारंटी है। अगर कुछ नादान और शरारती लोग इस नाव में छेद करने लगें और समझदार लोग ख़ामोश रहें, तो अंततः सभी डूब जाएँगे। लेकिन अगर वे आगे बढ़कर उनका हाथ रोक लें, तो वे ख़ुद भी बचेंगे और सबको तबाही से भी बचा लेंगे। इस लिए जब भी आप समाज में कोई बुराई या बिगाड़ देखें, तो सिर्फ़ शक और गुमान के आधार पर फ़ैसला न करें,बल्कि पूरी तरह से पुष्टि और जाँच करें। और फिर शरीयत के दायरे में रहते हुए उस बुराई को जल्द से जल्द ख़त्म करने की कोशिश करें। नबी करीम ﷺ के इस फ़रमान का पालन करते हुए:

مَنْ رَأَى مِنْكُمْ مُنْكَرًا فَلْيُغَيِّرْهُ بِيَدِهِ، فَإِنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَبِلِسَانِهِ، فَإِنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَبِقَلْبِهِ، وَذَلِكَ أَضْعَفُ الْإِيمَانِ [رَوَاهُ مُسْلِمٌ مِنْ حَدِيثِ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ]

"तुम में से जो व्यक्ति किसी बुराई को देखे तो उसे अपने हाथ से रोक दे, अगर इसकी ताक़त न हो तो अपनी ज़बान से रोके, अगर इसकी भी ताक़त न हो तो अपने दिल से उसे बुरा जाने, और यह ईमान का सबसे कमज़ोर दर्जा है।" (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है)।

इस्लामी भाइयो! फ़साद फैलाने वालों पर ख़ामोश रहना,और उन्हें सख़्ती से न रोकना; इस बात का संकेत है कि सब पर अज़ाब आएगा, और अल्लाह का क्रोध और उसकी लानत नाज़िल होगी। अल्लाह तआला ने कहा:

{لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَى لِسَانِ دَاوُودَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ (78) كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُنْكَرٍ فَعَلُوهُ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ} [المائدة: 78، 79]

"बनी इस्राईल में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन पर दाऊद और ईसा बिन मरियम की ज़बान से लानत की गई। यह इसलिए कि वे नाफ़रमानी (अवज्ञा) की और हद से बढ़ जाते थे। वे एक दूसरे को उस बुरे काम से जो वे करते थे, रोकते नहीं थे। यक़ीनन वे बहुत बुरा करते थे।" [सूरह अल-माइदा: 78, 79]

बेशक भ्रष्टाचार की रोकथाम में सहयोग करना, समाज के मूल्यों की रक्षा करना, और इसकी पवित्रता और ईमानदारी को बढ़ावा देना एक धार्मिक कर्तव्य और राष्ट्रीय ज़िम्मेदारी है जो हम सब पर अनिवार्य है। इसलिए हम पर फ़र्ज़ है कि हम अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास करें, भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ जंग में एक सफ़ में खड़े हों, और फ़साद पैदा करने वालों का हाथ पकड़ें, नबी करीम ﷺ के इस आदेश को सामने रखते हुए:

انْصُرْ أَخَاكَ ظَالِمًا أَوْ مَظْلُومًا

"अपने भाई की मदद करो, चाहे वह ज़ालिम (अत्याचारी) हो या मज़लूम (अत्याचार सहने वाला)।"

एक व्यक्ति ने पूछा: ऐ अल्लाह के रसूल! जब वह मज़लूम हो तो मैं उसकी मदद करूँगा, लेकिन अगर वह ज़ालिम हो तो मैं उसकी मदद कैसे करूँ? आप ﷺ ने फ़रमाया:

تَحْجُزُهُ - أَوْ تَمْنَعُهُ - مِنَ الظُّلْمِ؛ فَإِنَّ ذَلِكَ نَصْرُهُ

"तुम उसे ज़ुल्म से रोक लो या मना कर दो; असल में यही उसकी मदद है।" (इस हदीस को इमाम बुख़ारी रहिमहुल्लाह ने हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है)।

और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है,उन्होंने कहा: ऐ लोगो! तुम यह आयत पढ़ते हो:

{ يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ مَنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ } [المائدة: 105]

"ऐ ईमान वालो! तुम अपनी फ़िक्र करो, जब तुम सीधे रास्ते पर हो तो कोई गुमराह तुम्हें नुक़सान नहीं पहुँचा सकता।" [सूरह अल-माइदा: 105]

और मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह फ़रमाते हुए सुना है:

إِنَّ النَّاسَ إِذَا رَأَوُا الظَّالِمَ فَلَمْ يَأْخُذُوا عَلَى يَدَيْهِ، أَوْشَكَ أَنْ يَعُمَّهُمُ اللهُ بِعِقَابٍ مِنْهُ [رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ، وَقَالَ: هَذَا حَدِيثٌ صَحِيحٌ]

"बेशक जब लोग ज़ालिम को (ज़ुल्म करते) देखें और उसका हाथ न पकड़ें (उसे न रोकें), तो क़रीब है कि अल्लाह उन सबको अपने अज़ाब की चपेट में ले ले।" (इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और फ़रमाया कि यह हदीस सही है)।

एक दूसरी रिवायत में है:

وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَتَأْمُرُنَّ بِالْمَعْرُوفِ، وَلَتَنْهَوُنَّ عَنِ الْمُنْكَرِ، أَوْ لَيُوشِكَنَّ اللهُ أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عِقَابًا مِنْهُ، ثُمَّ تَدْعُونَهُ فَلَا يُسْتَجَابُ لَكُمْ

"उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! तुम ज़रूर-ब-ज़रूर नेकी का हुक्म दोगे और बुराई से रोकोगे, वरना क़रीब है कि अल्लाह तुम पर अपनी तरफ़ से कोई अज़ाब भेज दे, फिर तुम उससे दुआ माँगोगे और तुम्हारी दुआ क़बूल नहीं की जाएगी।"

ऐ अल्लाह! अपने बंदे और नबी मुहम्मद ﷺ पर दरूद व सलाम नाज़िल फ़रमा। ऐ अल्लाह! उनके तमाम सहाबा से राज़ी हो जा, ऐ सबसे अधिक दया करने वाले! अपनी रहमत से उनके साथ हम से भी राज़ी हो जा। ऐ अल्लाह! हमें अपने ज़िक्र, शुक्र और अपनी बेहतरीन इबादत की तौफ़ीक़ अता फ़रमा। ऐ अल्लाह! तू हमारा मददगार और रक्षक बन जा और हमारे ख़िलाफ़ न हो। हमारी मदद फ़रमा और हमारे ख़िलाफ़ किसी की मदद न कर, हमें हिदायत दे और हिदायत को हमारे लिए आसान कर दे। ऐ अल्लाह! कुवैत और इसके निवासियों की हर बुराई और तकलीफ़देह चीज़ से हिफ़ाज़त फ़रमा। और इस देश को और सारे इस्लामी देशों को अमन और सुकून का केंद्र बना दे। ऐ अल्लाह! हमारे अमीर और वली अहद (उत्तराधिकारी) को उन कामों की तौफ़ीक़ अता फ़रमा जिन्हें तू पसंद करता है और जिनसे तू राज़ी होता है,और नेकी तथा तक़वा की तरफ़ उनका मार्गदर्शन फ़रमा। और हमारी आख़िरी पुकार यही है कि सारी तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो सारी दुनिया का रब है।

ख़ुत्बात-ए-जुमा तैयार करने वाली कमेटी